KEEP THE TORCH OF DHAMMA A LIGHT

LET IT SHINE BRIGHTLY IN YOUR DAILY LIFE.

विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2567, पौष पूर्णिमा, 25 जनवरी, 2024, वर्ष 53, अंक 8

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

यथापि रुचिरं पुप्फं, वण्णवन्तं अगन्धकं।
एवं सुभासिता वाचा, अफला होति अकुब्बतो॥

जैसे कोई पुष्प सुंदर और वर्णयुक्त होने पर भी गंधरहित हो, वैसे ही अच्छी कही हुई (बुद्ध) वाणी होती है फलरहित, यदि कोई तदनुसार (आचरण) न करे।

यथापि रुचिरं पुप्फं, वण्णवन्तं सुगन्धकं।
एवं सुभासिता वाचा, सफला होति कुब्बतो॥

जैसे कोई पुष्प सुंदर और वर्णयुक्त हो और (सु-)गंध वाला हो, वैसे ही अच्छी कही हुई (बुद्ध) वाणी होती है फलसहित, यदि कोई तदनुसार (आचरण) करने वाला हो।

– धम्मपदपालि- 51-52, पुप्फवग्गो

जन्म शताब्दी विशेषांक

कल्याणमित्र श्री सत्यनारायण गोयन्का जी का जन्म शताब्दी समारोह, रविवार, 4 फरवरी, 2024

प्रिय साधको,

प्रधान विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का जी का जन्म शताब्दी समारोह- 30 जनवरी के बजाय साधकों की सुविधा के लिए **रविवार, 4 फरवरी 2024** को 'विश्व विपश्यना पगोडा', गोराई, मुंबई एवं कई अन्य कई केन्द्रों पर आयोजित किया जा रहा है।

(कार्यक्रम की नई रूपरेखा नीचे दी गई है, कृपया जाँच लें।)

उनके द्वारा सिखाई गई विपश्यना की शुद्ध विधि के अभ्यास से हर साधक को लाभ हुआ है तो स्वाभावतः हम उनके प्रति सदैव कृतज्ञ रहते हैं। इसलिए उनकी जन्म शताब्दी हमारे लिए एक विशेष अवसर बन जाती है जबकि हम उनके प्रेरणाजनक धार्मिक जीवन से स्वयं को पुनः अनुप्रेरित करें और अपनी धर्म-चेतना, अभ्यास, आचरण व धर्मसेवा को खूब बलवान बनाएं। द्वितीय बुद्ध शासन तो फैलना ही है, हम भी अपने आप को और अधिक योग्य बनाकर उसका अंग बनें और उससे लाभ प्राप्त करें। इसके लिए गोयन्का जी के जीवन पर एक नज़र पुनः डालते हैं।

गोयन्का जी का जन्म माघ शुक्ल द्वादशी को 1924 में मांडले शहर, म्यंमा में हुआ। पढ़ाई में बहुत रुचि रही, लेकिन व्यावसायिक जीवन में जल्दी कदम रखने के कारण पढ़ाई पूरी न कर सके, फिरभी पढ़ना नहीं छोड़ा। द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान भारत आए और राजस्थान में अपने पैत्रिक गाँव चूरू में रहे और वहां हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के माध्यम से हिन्दी की पढ़ाई जारी रखी। युद्ध के बाद म्यंमा वापस चले गए और व्यवसाय में खूब प्रगति की। अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक जिम्मेदारियां भी अपने कंधों पर लीं। परिणाम स्वरूप तनाव बढ़ता रहा और बचपन से माइग्रेन का जो रोग उन्हें कभी-कभार पीड़ित करता था, वह हर हफ्ते-पंद्रह दिन में होने लगा। रोग के उपचार के लिए सारे रास्ते बंद हो जाने पर उनके मित्र, म्यंमा के तत्कालीन एटॉर्नी जनरल ऊ छान टुन ने उन्हें विपश्यना साधना आजमा कर देखने को कहा और म्यंमा के तत्कालीन अकाउंटेंट जनरल ऊ बा खिन के समक्ष भेजा। उस समय प्रथम बुद्ध शासन का अन्त और द्वितीय बुद्ध शासन का आरम्भ होने ही वाला था। म्यंमा में छठीं संगीति चल रही थी। उसी बीच १९५५ में गोयन्का जी पहली बार सयाजी ऊ बा खिन से मिले। सयाजी ने विपश्यना का उपयोग निर्वाण प्राप्ति के लक्ष्य से करने को प्रेरित किया, न कि केवल माइग्रेन-निवारण के लिए।

लौट कर आये तो कुछ समय तक झिझकते रहे फिर एक दिन आश्रम देखने के भाव से गये तो वहां सयाजी से भेंट हो गयी। उनसे कहा कि सयाजी अब मैं शिविर में आध्यात्मिक उन्नति की विद्या सीखने ही आऊंगा। सयाजी ने कहा, "अभी बरसात में यहां शिविर नहीं लगते। अगला शिविर 1 सितम्बर को आरंभ होगा, उसमें चले आना। फिलहाल आओ, हमारे साथ दोपहर का शाकाहारी भोजन भी चखते जाओ। मुझे विश्वास है, तुम्हें अच्छा लगेगा।"

"इस प्रकार उनका निकट सान्निध्य पाकर मैं धन्य हो गया। सयाजी को नमस्कार करके उनसे विदाई ली और घर लौटा। शिविर आरंभ होने में अभी ढाई-तीन महीने की देर थी। मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि उतने दिनों तक मुझे माइग्रेन का दौरा नहीं आया। बिना साधना सीखे ही बार-बार मेरा मन भीतर की ओर समाहित होने लगता, बड़ी सुखद अनुभूति होती"।

[मुझे लगभग ३० वर्ष पश्चात यह पता चला कि उस समय मुझे आते देख कर उन्होंने अपने पास बैठे एक शिष्य से मेरे बारे में यह कहा था कि यह प्रभूत पुण्यपारमी संपन्न 'पोग्गो' (पुद्गल) है, विपश्यना लेगा तो इसका जीवन बदल जायगा और बहुतों के कल्याण में सहायक होगा। —स.ना. गो.]

अनेक जन्मों के पूर्वाभ्यास से श्री गोयन्का जी की पारमी बहुत पुष्ट थी, गुरुत्व बिल्कुल साफ था। और हुआ भी ऐसा ही।

पहले शिविर में ही बहुत गहरी प्रगति हुई और वे सयाजी के साथ पूरी तरह से जुड़ गए। म्यंमा में लोकतंत्र समाप्ति के साथ जब सभी व्यवसायों का राष्ट्रीयकरण हुआ तब गोयन्का जी के सभी औद्योगिक संस्थान छिन जाने पर भी उनकी समता में कोई कमी नहीं आई। एक ही भाव जागा कि अब धर्म के लिए पर्याप्त समय मिलेगा। सयाजी के चरणों में बैठ कर धर्म का अभ्यास व सेवा के साथ-साथ परियत्ति का भी खूब अध्ययन व अभ्यास किया।

१९६९ में जब भारत आए तब सयाजी ने याद दिलाया कि भारत तुम नहीं, धर्म जा रहा है। वास्तव में गोयन्का जी तो माध्यम मात्र थे। वस्तुतः धर्म ही भारत आया। अशोककालीन तृतीय संगीति पर जब धर्मदूत कई स्थानों पर भेजे गए तब किसी संत ने भविष्यवाणी की थी कि यह धर्म-रत्न स्वर्ण-भूमि (म्यंमा) में सुरक्षित रहेगा और भगवान बुद्ध के महापरिनिब्बान के २५०० वर्ष बाद फिर भारत-भूमि लौटेगा। यह बात मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढी म्यंमा व अन्य थेरवादी देशों में चलती रही।

गोयन्का जी जब भारत आए और जिस प्रकार धर्म का प्रकाश भारत के साथ-साथ सारे विश्व में लाखों लोगों तक फैलने लगा तब सयाजी का कथन स्पष्ट हुआ कि सचमुच- "धर्म जा रहा है"।

सयाजी का मार्गदर्शन १९७१ तक निरन्तर मिलता रहा। पर उनके देहान्त के बाद, अपनी धर्म चेतना को जिस प्रकार दृढ़ बना कर गोयन्का जी ने ४५ वर्षों तक धर्म को सर्वत्र फैलाया, उससे उनके मन की असाधारण निर्मलता, धर्म में असाधारण श्रद्धा, असीम करुणा एवं अनत्तभाव आदि के साथ द्वितीय बुद्ध शासन के प्रति पूर्ण आत्म-समर्पण साफ झलकता है।

पहले शिविर से ही निरन्तर निःशुल्क शिविर चलाते रहे। केवल विपश्यना से लाभ प्राप्त होने पर औरों के कल्याणार्थ स्वेच्छा से दिए हुए साधकों के दान से ही शिविर चलाए जाते रहे हैं। जब गोयन्का जी ने सितम्बर २०१३ में शरीर छोड़ा तब विश्व के हर महाद्वीप पर और हर महत्त्वपूर्ण राष्ट्र में विपश्यना केन्द्र कार्यरत थे। उनके देहावसान तक करीब १८० केन्द्र व १२०० से अधिक सहायक आचार्य नियुक्त किए जा चुके थे। लाखों की संख्या में गरीब, मध्यमवर्गीय और संभ्रांत परिवारों के लोग विपश्यना का लाभ ले चुके थे।

परियत्ति के क्षेत्र में देवनागरी लिपि में पूरे तिपिटक को उसकी अर्थकथाओं और टीकाओं सहित पुस्तक के रूप में प्रकाशित करके पालि पण्डितों तथा सार्वजनिक वाचनालयों आदि को बांटा गया, इसके अतिरिक्त भारत व विश्व की अनेक लिपियों में पालि तिपिटक इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध करा दिया गया। साथ ही, तिपिटक में प्राप्त भगवान के अनेक उपदेशों का पालि से हिन्दी, अंग्रेजी एवं अन्य कई भाषाओं में अनुवाद भी प्रकाशित किया गया।

अनेक पगोडा या स्तूपों का निर्माण हुआ, जिसमें मुख्य है, "विश्व विपश्यना पगोडा", जहां भगवान बुद्ध की शरीर धातु सन्निधानित की गयी है जिसे यह सहस्राधिक वर्षों तक सुरक्षित रखेगा। सद्धर्म के पटिपत्ति स्वरूप को इतने वर्षों तक सुरक्षित रखने और भावी पीढ़ी को उपलब्ध कराने वाली म्यंमा की गुरु-शिष्य परंपरा के प्रति कृतज्ञता भी व्यक्त करता रहेगा।

एक ही जीवन में, अकेले आए गोयन्का जी, इतना सारा काम कर गए और इतने साधकों को एक साथ जोड़ कर, बहुत विशाल संस्थानों का समूह साधकों को सौंप कर चले गए। वे कहते भी थे- "मेरे तो दो हाथ, हजारों हाथ धर्म के"। हमें भी पुण्य अर्जित करने का बहुत बड़ा सहारा है यह- धर्म-कार्य।

साधक तो आदर व कृतज्ञता से भाव-विभोर हो उन्हें गुरुजी ही कहते हैं, परंतु वे स्वयं को कल्याणमित्र ही कहते और मानते थे।

यह कोई मन-गढ़न्त शब्द नहीं, भगवान की वाणी से लिया गया बहुत महत्त्वपूर्ण शब्द है। कल्याणमित्रता के विषय में भगवान बुद्ध ने अनेक उपदेश दिए। अङ्गुत्तरनिकाय में एककनिपात के कल्याणमित्तादिवर्ग में भगवान कहते हैं - *'नाहं , भिक्खवे, अञ्ञं एकधम्मम्पि समनुपस्सामि येन अनुप्पन्ना वा कुसला धम्मा उप्पज्जन्ति उप्पन्ना वा अकुसला धम्मा परिहायन्ति यथयिदं, भिक्खवे, कल्याणमित्तता। कल्याणमित्तस्स, भिक्खवे, अनुप्पन्ना चेव कुसला धम्मा उप्पज्जन्ति उप्पन्ना च अकुसला धम्मा परिहायन्ती''ति।*

मैं ऐसा एक भी धर्म नहीं देखता जो अनुत्पन्न कुशल धर्म का उत्पाद करे, उत्पन्न अकुशल धर्मों का प्रहाण करे, जैसे कि, भिक्षुओं, कल्याणमित्रता। कल्याणमित्र ही अनुत्पन्न कुशल धर्म को उत्पन्न करते हैं और उत्पन्न अकुशल धर्म का प्रहाण करते हैं।

अङ्गुत्तरनिकाय के सत्तकनिपात के दुतियमित्तसुत्त में भगवान कल्याणमित्र की सात धर्मों में दक्षता का परिचय देते हैं – *"सत्तहि, भिक्खवे, धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु मित्तो सेवितब्बो भजितब्बो पयिरुपासितब्बो अपि पनुज्जमानेनपि। कतमेहि सत्तहि? पियो च होति मनापो च गरु च भावनीयो च वत्ता च वचनक्खमो च गम्भीरञ्च कथं कत्ता होति, नो च अट्ठाने नियोजेति। इमेहि खो, भिक्खवे, सत्तहि धम्मेहि समन्नागतो भिक्खु मित्तो सेवितब्बो भजितब्बो पयिरुपासितब्बो अपि पनुज्जमानेनपी''ति।*

सात धर्मों को प्राप्त भिक्षु (कल्याण) मित्र है, सेवा के योग्य है, भाजन के योग्य है, वे पास नहीं बुलाएं तब भी निकट रहने योग्य हैं। कौन से सात धर्म? लोकप्रिय होता है (पियो), सुखद होता है (मनापो), गुरु होता है (गरु), आचरण से युक्त होता है (भावनीयो), वक्ता होता है (वत्ता), मीठी वाणी बोलने वाला होता है (वचनक्खमो), गम्भीर विषयों पर कथा-वार्ता करने वाला होता है (गंभीरञ्च कथं कत्ता) जो कुशलता की ओर जाने को प्रेरित करने वाला होता है (नो च अट्ठाने नियोजेति)। ऐसे सात धर्मों को प्राप्त भिक्षु कल्याणमित्र है, ये सेवा योग्य हैं, भाजन योग्य हैं, वे पास नहीं बुलाएं तब भी उनके निकट रहने योग्य हैं।

ऐसे जानने पर समझ में आता है कि कितने भाग्यशाली हैं हम जो हमें गोयन्का जी जैसे कल्याणमित्र का सान्निध्य व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, शुद्ध विपश्यना विधि सीखने का अवसर मिला और आज भी, उन्हीं के निर्देशानुसार विपश्यना करते रहते हैं।

ऐसे कल्याणमित्र की जन्म शताब्दी पर उनकी दी हुई शिक्षा के हर महत्त्वपूर्ण पद को याद करना, उसका अभ्यास करना और उस महत्त्व के दिन तो सभी साधकों के साथ मिलकर सामूहिक साधना करना बहुत लाभकारी है।

इसलिए ४ फरवरी, २०२४ को मुंबई में स्थित विश्व विपश्यना पगोडा पर सामूहिक साधना व कुछ अन्य विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। विश्व के सभी लोग चाहे वे जहां कहीं भी हों, यदि एक साथ ध्यान करने के लिए तत्पर हों तो निश्चित रूप से उन सब को एक-दूसरे से बल मिलेगा और सब की साधना पुष्टतर होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसीलिए

भगवान ने कहा है- *"समग्गानं तपो सुखो"*।

गुरुजी की जन्म शताब्दी हमारे धर्म के अभ्यास को नई ऊर्जा से भर दे। आइए, फिर शुरू कर दें!

सादर प्रणाम!

रविवार, 4 फरवरी, 2024 के कार्यक्रम

(यह केवल साधकों के लिए है।)

यहां स्कैन करके अपना नाम रजिस्टर करा सकते हैं। ↳ (रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है।)

प्रिय धम्म भाइयो और बहनो,

पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का जी (१९२४-२०२४) की जन्म शताब्दी पर आप सभी को मंगल मैत्री।

गुरुजी ने बहुत करुणा और मैत्री के साथ हम सभी को विपश्यना की शुद्ध विधा का धर्मदान दिया। हमें अपने दुखों से मुक्त होने का मार्ग दिखाया, और इस कार्य में आत्मनिर्भर बनाया। उन्होंने अपने जीवन के 58 वर्ष अपने आप को धर्म में पुष्ट करने और धर्म को वितरित करने में लगाया। १९६९ में भारत आने के बाद से उन्होंने विपश्यना को विश्वभर में अनेकों साधकों तक पहुँचाया। विपश्यना ने हमें अपने मन को निर्मल बनाने और अनेकों धर्म-पिपासुओं की सेवा करने का अवसर दिया जिससे हमें द्वितीय बुद्ध शासन में अपना योगदान दे कर पारमी अर्जित करने का मौका मिला।

अब पूज्य गुरुजी की जन्म शताब्दी एक ऐसा अवसर है जब हम गुरुजी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के साथ-साथ अपनी साधना व सेवा को नई ऊर्जा से भर सकते हैं। इसलिए मुंबई-स्थित "विश्व विपश्यना पगोडा" पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसका सीधा प्रसारण यूट्यूब पर भी किया जायगा।

यह कार्यक्रम रविवार के दिन फरवरी 4, 2024 को विश्व विपश्यना पगोडा पर सुबह 10 बजे से सायं 4 बजे के बीच होगा। हम आशा करते हैं कि "विश्व विपश्यना पगोडा" में निधानित भगवान बुद्ध की शरीर धातु के नीचे अधिक से अधिक संख्या में हम सभी एक साथ बैठ कर तपने के इस सुअवसर का लाभ अवश्य उठायेंगे।

गुरुजी अनेकों बार भगवान की इस वाणी का महत्त्व समझाते थे – ***"समग्गानं तपो सुखो"*** – साथ मिल कर तपना सुखदायक होता है।

तो आइए, फरवरी 4, 2024 को, हम विश्व में जहाँ कहीं भी हों, अपने तथा बहुतों के हित-सुख के लिए मिलकर विपश्यना साधना करें अर्थात सारे विश्व के लोग समग्गानं का लाभ उठायें। सब की एकत्रित ऊर्जा के बल पर सारे विश्व का कल्याण हो। पूज्य गुरुजी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का यह बहुत बड़ा और योग्य सुअवसर है।

हम आपका यथानुकूल किसी भी समय जुड़ने का स्वागत करते हैं।

आप इस कार्यक्रम से अनेक प्रकार से जुड़ सकते हैं, जैसे:-

1. विश्व विपश्यना पगोडा पर साधना कर सकते हैं (पंजीकरण की लिंक: ***https://centenary.globalpagoda.org)***

2. समीप के विपश्यना केंद्र पर सुविधा की गयी हो तो वहां पर साधना अवश्य करें। (सर्वत्र सीधा प्रसारण होगा।)

3. सामूहिक साधना के लिए जिन स्थलों पर साधारणतया जाते हों, वहीं सुविधा करके साधना कर कते हैं।

4. स्थानीय धम्म-बन्धुओं के साथ सामूहिक साधना का आयोजन करके भी जुड़ सकते हैं।

5. घर या कार्यालय में भी सुविधा करके साधना कर सकते हैं।

कार्यक्रम का सीधा-प्रसारण Vipassana Meditation 'यूट्यूब' चैनल पर किया जाएगा. Link:-

https://youtube.com/live/KSKfzUOvWjQ?feature=share

विश्व विपश्यना पगोडा पर कार्यक्रमों की रूपरेखा निम्न प्रकार है:—

समयः	कार्यक्रम
सुबह 9 बजे से दोपहर 11 बजे तक	सामूहिक साधना
" 11:00 बजे से 11:45 बजे तक	जन्म शताब्दी का महत्त्व
" 11:45 बजे से 12:00 बजे तक	भगवान बुद्ध से लेकर कल्याणमित्र श्री सत्यनारायण गोयन्का जी तक गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा धर्म-यात्रा की मनमोहक प्रदर्शनी
दोपहर 12:00 बजे से – 1:00 बजे तक	भोजनावकाश
1:00 बजे से – 1:10 बजे तक	I- पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण जी का आत्मकथन – 'Let Us Walk the Path of Dhamma' एवं 'चलें धर्म के पंथ' पुस्तकों का अनावरण
	II- 'विपश्यना: विश्व शांति के लिए आंतरिक शांति' नामक कॉफी टेबल पुस्तक का अनावरण
	III- 'स्मारिका दैनंदिनी– धर्म का जीवन' का अनावरण
1:10 बजे से – 1:30 बजे तक	पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का के 1955 तक के जीवन पर एक फिल्म
अपराह्न 1:30 बजे से – 2:30 बजे तक	पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का जी के सपने और हमारा कर्तव्य
2:30 बजे से – 3:40 बजे तक	पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का जी की जन्म-शताब्दी के अवसर पर ***सम्मा सङ्कप्पो*** (सम्यक संकल्प)
3:40 बजे से – 4:00 बजे तक	मंगल मैत्री

यह अनेक साधकों के लिए साथ मिल कर साधना करने, एवं पूज्य गुरुजी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का स्वर्णिम अवसर है।

सादर प्रणाम व मंगल मैत्री,

ट्रस्टीगण, विश्व विपश्यना प्रतिष्ठान एवं विपश्यना विशोधन विन्यास, मुंबई

रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

जन्म शताब्दी कार्यक्रम के लिए विशेष बसों की व्यवस्था

नाशिक, पुणे तथा मुंबई के विभिन्न स्थानों से 4 फरवरी को पगोडा आने-जाने के लिए साधकों द्वारा कई बसों की व्यवस्था की गयी है। इस बारे में अधिक जानकारी एवं बुकिंग के लिए निम्न लिंक पर क्लिक करें:-

http://busseva.tejash.me

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. कु. शीला सोनटक्के, नागपुर
2. श्री धनराज रामटेके, नागपुर
3. श्री नामदेव भोयर, अकोला
4. श्री जयंत मांकड़, घाटनजी, यवतमाल
5. श्री भगवान सरदार, घाटनजी, यवतमाल

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री राम सेवक मौर्य, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
2. श्री रमेश चन्द गौतम, नोएडा, उत्तर प्रदेश
3. सुश्री किरन आर्या, जिला बस्ती, उत्तर प्र.
4. श्रीमती विमलताई परदेशी, जळगांव
5. श्री नवनीत कोचे, नागपुर

बालशिविर शिक्षक

1. श्री मयिल मुरुगन, सिरकाली (तमिलनाडु)
2. कु. मीरा मोहन, चेन्नई
3. श्री सरवनन एस, चेन्नई
4. कु. सथियावानी मुरुर्गन, थेनी (तमिलनाडु)
5. श्रीमती मंजू गुप्ता, अलवर
6. श्री रशाद हुसैन, गुवाहाटी
7. श्री दिगंता काकती, गुवाहाटी
8. Mrs Romanea Chem, Cambodia

मुंबई महानगर क्षेत्र में विपश्यना संबंधी गतिविधियां

मुंबई महानगर एवं आसपास के क्षेत्रों में कई विपश्यना केंद्र और ध्यान की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इनके बारे में विस्तृत जानकारी के लिए कृपया निम्न लिंक को देखें:

https://mumbai.vridhamma.org

इसी प्रकार **पूरे भारत में 1-दिवसीय शिविर और सामूहिक साधनाओं** के लिए कृपया इस लिंक पर क्लिक करके देखें:

https://www.vridhamma.org/1-day-Courses-Information-in-India

oooooooooooooooooooo

ऑनलाइन भावी शिविर कार्यक्रम एवं आवेदन

सभी भावी शिविरों की जानकारी नेट पर निम्न लिंक्स पर उपलब्ध हैं। सभी प्रकार की बुकिंग ऑनलाइन ही हो रही है। अतः आप लोगों से निवेदन है कि ***धम्मगिरि के लिए*** निम्न लिंक पर चेक करें और अपने उपयुक्त शिविर के लिए अथवा सेवा के लिए सीधे ऑनलाइन आवेदन करें:

https://www.dhamma.org/en/schedules/schgiri

oooooooooooooooooooo

विश्वभर के सभी भावी शिविरों की जानकारी एवं आवेदन के लिए: ***https://schedule.vridhamma.org एवं www.dhamma.org***

अथवा निम्न लिंक भी देखें--

https://www.dhamma.org/en-US/locations/directory#IN

हिंदी वेबसाइट हेतु लिंक: www.hindi.dhamma.org

oooooooooooooooooooo

दोहे धर्म के

गुरुवर! तेरे चरण की, धूल लगे मम शीश।
सदा धरम में रत रहूं, मिले यही आशीष॥

आज नमन का दिवस है, अंतर भरी उमंग।
श्रद्धा और कृतज्ञता, विमल भक्ति का रंग॥

ग्रहण करूं गुरुदेवजी, ऐसी शुभ आशीष।
धर्म बोधि हिय में धरूं, चरण नवाऊं शीश॥

गुरुवर! तुम मिलते नहीं, धरम गंग के तीर।
तो बस गंगा पूजता, कभी न पीता नीर॥

दूहा धरम रा

सतगुरु तो किरपा करी, दियो धरम रो नीर।
धोयां सरसी आप ही, अपणो मैलो चीर॥

सतगुरु दीनी साधना, धोवण चित्त-विकार।
धोतां धोतां आप ही, खुलै मुक्ति रो द्वार॥

धन्य भाग! साबण मिली, पायो निरमळ नीर।
सतगुरु री होयी क्रिपा, धोवां मैला चीर॥

गुरु तो पंथ दिखाणियो, दीन्यो पंथ दिखाय।
मंजिल आपां पूगस्यां, चाल्यां अपणै पांय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड,
वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

धम्म ग्राम
माता विशाखा हैप्पी विलेज सेवाश्रम
(विपस्सी साधकों का निर्माणाधीन सामूहिक निवास स्थल व सेवा केंद्र)
ग्राम- लखाही-271805, श्रावस्ती, उत्तर प्रदेश, भारत
M. +91 8756187439, 9935310792
E-Mail -happyvillagesociety@gmail.com
www.happyvillagesewashram.com
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74,
सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003,
फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा. 09423187301,
Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2567, पौष पूर्णिमा, 25 जनवरी, 2024; वर्ष 53, अंक 8

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 16 JANUARY, 2024, DATE OF PUBLICATION: 25 JANUARY, 2024

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244998, 243553, 244076, 244086, 244144, 244440
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org